

जनजातीय क्षेत्रों में सकिल सेल एनीमिया के रोगियों को होम्योपैथी दवाओं से मिला उपचार चर्चा में क्यों?

11 अगस्त, 2022 को मध्य प्रदेश के आयुष वभाग द्वारा बताया गया कि अभी तक शासकीय होम्योपैथी चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल द्वारा सकिल सेल एनीमिया की पहचान के लिये घर-घर जाकर स्क्रीनिंग टेस्ट किया गया, जिसमें करीब 23 हजार से अधिक जनजातीय व्यक्तियों का परीक्षण किया गया।

प्रमुख बिंदु

- परीक्षण के बाद 2138 जनजातीय व्यक्तियों को सकिल सेल रोग से पॉजिटिव पाए गए। इन रोगियों का दोबारा परीक्षण कराए जाने पर 1656 व्यक्तियों में बीमारी की पुष्टि हुई। प्रभावित व्यक्तियों को रसिर्च टीम द्वारा होम्योपैथी दवाएँ दी गईं।
- नयिमति दवा देने के बाद प्रभावित व्यक्तियों को फायदा मिला है। इस बीमारी में प्रभावित व्यक्तियों में रक्त की कमी और दर्द की समस्या बनी रहती थी। दवा लेने से रोगियों को इससे छुटकारा मिला है। इन रोगियों को समय-समय पर खून चढ़ाए जाने की आवश्यकता होती थी, इससे भी उन्हें छुटकारा मिला है। इसके साथ ही इनकी रोग प्रतिक्रिया क्षमता भी बढ़ी है।
- उल्लेखनीय है कि सरकारी होम्योपैथी मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल को 3 वर्ष पूर्व भारत सरकार की ओर से 3.75 करोड़ रुपए का एक खास प्रोजेक्ट मिला था, जिसके तहत मध्य प्रदेश की जनजातियों में इस बीमारी से ग्रस्त लोगों को पहचानकर उनका इलाज किया जा रहा है।
- भारत सरकार के जनजातीय वभाग द्वारा मध्य प्रदेश के आयुष वभाग के सहयोग से प्रदेश के चार जिलों- डडोरी, मंडला, छदिवाड़ा और शहडोल में रहने वाली वंश पछिड़ी जनजात बैगा और भारिया में सकिल सेल के उपचार के लिये वंश परियोजना चलाई जा रही है।
- इस परियोजना में जिन रोगियों को होम्योपैथी की दवाइयाँ दी जा रही हैं, रसिर्च टीम द्वारा उनकी वर्तमान जीवन-शैली का नयिमति अध्ययन भी किया जा रहा है। होम्योपैथी चिकित्सा महाविद्यालय के इस प्रोजेक्ट में वंश सवास्थ्य संगठन, एम्स, आईसीएमआर, भारतीय वंशज्ञान संस्थान और मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान भोपाल की रसिर्च कार्य में मदद ली जा रही है।
- सकिल सेल एनीमिया, एक ऐसी आनुवंशिक बीमारी है, जिसमें खून की कोशिकाओं का आकार गोल की बजाय चाँद (या हँसए) के आकार का हो जाता है और शरीर में रक्त व ऑक्सीजन की कमी होने लगती है। यह बीमारी आमतौर पर जनजातियों में होती है और इसका इलाज एलोपैथी में नहीं है, लेकिन होम्योपैथी में ऐसी दवाएँ हैं, जिनसे शरीर में नया खून बनने लगे।
- ज्ञातव्य है कि मध्य प्रदेश में तीन वंश पछिड़ी जनजात, यथा- भारिया, बैगा एवं सहरिया निवासरत हैं। राज्य शासन द्वारा 11 वंश पछिड़ी जनजातों का विकास अभिकरणों का गठन किया गया है, जो मंडला, बैहरी (बालाघाट), डडोरी, पुष्पराजगढ़ (अनूपपुर), शहडोल, उमरिया, ग्वालियर (दतिया जिला सहित), श्यामपुर (भंडा, मुरैना जिला सहित), शिवपुरी, गुना (अशोकनगर जिला सहित) तथा तामिया (छदिवाड़ा) में स्थित है। इन अभिकरणों में चहिनकति किये गए 2314 ग्रामों में वंश पछिड़ी जनजातों के 5.51 लाख व्यक्तियों निवास करते हैं।